सर्वज्ञता और प्रायिकतात्मकता पर

('Of Omniscience and Probability' का लेखक द्वारा सम्पादित हिंदी अनुवाद)

सारांश

इस नोट में लेखक संयोग और ज्ञान के बीच संबंध पर टिप्पणी करते हैं। यह अवलोकन है कि प्रायिकतात्मक ज्ञान हमारी मानवीय अज्ञानता के सामने घटनाओं के संभावित परिणामों का सर्वोत्तम अनुमान है।

परिभाषा के अनुसार, सीमित ज्ञान प्रायिकतात्मक तर्क की ओर ले जाता है। इसलिए यह विरोधाभासी या भ्रमित करने वाली बात नहीं है कि सर्वज्ञ दृष्टिकोण[1] में कुछ भी यादृच्छिक नहीं होता[2]।

एक गहरा प्रश्न यह है कि क्या ये दो दृष्टिकोण - एकल पर्यवेक्षक और बहु पर्यवेक्षक - अस्तित्व में हैं? या केवल सर्वोच्च ब्रह्म ही है [2] और कोई पर्यवेक्षक नहीं है [3]? बाद वाले मामले में "कुछ भी यादृच्छिक नहीं होता" एक सर्वोच्च शासन कानून बन जाता है।

तब कोई भी जिसे प्रायिकतात्मक तर्क की आवश्यकता होती है, वह सीमित ज्ञान से कार्य कर रहा है। इसलिए सीमित ज्ञान किसी तरह से पर्यवेक्षकों के अस्तित्व के साथ समानार्थी है। सीमित ज्ञान स्थानिक-मन को भी दर्शाता है। इसके अलावा, यह उस गहरी बैठी धारणा से उत्पन्न होता है जिसे विभिन्न ज्ञानी धर्म गुरुओं ने युगों से दूर करने का प्रयास किया है [4 पृष्ठ 60-61]।

हम इस प्रश्न को अनुत्तरित छोड़ते हैं कि विज्ञान का अधिकांश निर्माण सीमित ज्ञान की स्थिति पर क्यों आधारित है। इससे संबंधित एक विस्तृत लक्ष्य है जो विज्ञान और वैज्ञानिक सिद्धांतों को अस्थानिक बनाने का प्रयास करता है।

---

[1] न्यूटन् का Sensorium Dei [1]।

[2] यह समय की अवधारणा से भी संबंधित है जैसे कि अस्तित्व के क्षेत्र का एक संग्राहक: यदि समय (सभी समय का उल्लेख करते हुए) एक बार ज्ञात हो जाता है, तो संग्राहक प्राप्त हो जाता है, जिसे प्राप्त करने पर सभी सामग्रियाँ उजागर हो जाती हैं और यादृच्छिकता की कोई भूमिका नहीं रह जाती।

संदर्भ

[1] T. Luoma. Incarnation and Physics: Natural Science in the Theology of Thomas F. Torrance. AAR Academy Series. Oxford University Press, 2002.

[2] Walter Eugene Clark. The Aryabhatiya of Aryabhata: An Ancient Indian Work on Mathematics and Astronomy. University of Chicago Press, 1930.

[3] Sri Harsa. Khandanakhandakhadya. Achyut Granthmala, Benares, 1969.

[4] Ashtavakra Gita. Swami Anubhavananda.